

राहुल की आक्रामकता

बोट चोरों के नारे के साथ नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी की आक्रामकता कम होती दिखाई नहीं दे रही है। वह बराबर सरकार और चुनाव आयोग पर निशाना साथ रहे हैं। अब तो उन्होंने बोट चोरी के नारे को बेरोजगारी से भी जोड़ दिया है। एक्स पर लिखी एक पोस्ट में उन्होंने मंगलवार को कहा कि देश में युवाओं की सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी है और इसका सीधा रिश्ता बोट चोरी है। उन्होंने इस संदर्भ में बिहार के बेरोजगार युवाओं पर बीड़ियों शेयर करने हुए लिखा कि जब कोई सरकार जनता का विश्वास जीतकर सत्ता में आती है तो उसका पहला कर्तव्य होता है युवाओं को रोजगार व अवसरे देना। लेकिन केंद्र में बैठी मादी सरकार को उसकी जरा भी परावर नहीं है। उसका कारण यह है कि भाजपा न्यूनाव ईमानदारी से नहीं जीती है। और वह बोट चोरी और संस्थाओं को केंद्र करके सत्ता में बनी रहती है। जिसका परिणाम यह है कि इस समय बेरोजगारी 45 साल के सबसे हाई लेवल पर पहुंच गई है। मतलब साफ है कि राहुल गांधी अब देश के युवाओं को फोकस कर रहे हैं। वह हाल ही में नेपाल में जिस तरह जैन जी समूह ने आक्रामकता दिखाई थी और वह वहां तख्ता पलट करने में कामयाब हो गए थे, इस तरह की बातें वह देश में भी करते दिखाई दे रहे हैं और कर कर होते हैं कि जैन जी ही बोट चोरी और अपने अधिकारों की रक्षा कराए। ऐसा करने में वह उनको पुरा अपना सहयोग देने की बात भी कह रहे हैं। जाहां है, इस तरह के बेयानों को भाजपा भी लपक रही है और भाजपा के नेता वह है कि राहुल गांधी माआ। 'वादियों की भाषा' बोल रहे हैं। कोई इन्हें नक्सलवाद से प्रभावित होता बता रहा है। जगनीति में आरोप-प्रत्यारोप, क्रिया प्रतिक्रिया होती रहती है लेकिन एक बात साफ है कि बोट चोरी का मुद्दा देश में अब आकार लेता दिखाई दे रहा है। इससे कोई इनकार नहीं कर सकता। जिसका हाल ही में संपन्न बिहार में बोट अधिकार यात्रा में उमड़ा समूह जीता जागता सबूत है। यह बात अपनी जगह है कि यह उमड़ा जनसमूह किस हृदय के पक्ष में बोट के रूप में अपना चमत्कार दिखाएगा। लेकिन इससे यह बात तो साफ हो जाती है कि अब देश के युवा राहुल गांधी की बात पर ध्यान दे रहे हैं और बोट चोरी का मुद्दा अब युवा वर्ग में अपील करता दिखाई दे रहा है। यहीं कारण है कि राहुल गांधी इस मुद्दे को उठाने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ रहे हैं और अब तो उन्होंने इसको विस्तार देते हुए चतुराई के साथ बेरोजगारी वह मुद्दा है, जो युवाओं को काफी प्रभावित कर सकता है, क्योंकि इससे कोई इनकार नहीं कर सकता कि आज बेरोजगारी व महांगाई अपने चरम पर है। भले ही सरकार ने जीएसटी में सुधार किया हो, लेकिन जिस तरह की समस्या है उससे देश की जनता को बड़ी निजात मिलेगी अभी कहना मुश्किल है।

अदालत का दिल से थुक्रिया

हर इट की एक मियाद होती है, भाजपा को सामाजिक सोर्हाई के प्रतीक लाग कभी अच्छे नहीं लगते हैं, आजम खां की रिहाई उनके और उनके परिवार और हम सब के साथ-साथ, उन सब लोगों के लिए राहत और खुशी की बात है जो 'इंसाफ' में ऐतबार करते हैं, न्याय में विश्वास को बनाए रखने के लिए। अदालत का दिल से शुक्रिया, प्रदेश में समाजवादी सरकार बनने पर उन पर सभी झूटे मुकदमे वापस होंगे, आजम खां एक बार किर से हर उपक्षेत्र, पीढ़ीत, दुखी, अपमानित के साथ खड़े होकर, भाजपाइयों और उनके संगों-साथियों के द्वारा किये जा रहे जनता के दमन के खिलाफ आजां उड़ाएंगे और हमेशा की तरह देश-प्रदेश की भावावात्मक एकता के प्रतीक बनकर, समाजवादी मूल्यों और सिद्धांतों के साथ, सामाजिक न्याय के संर्घण की रह पर आगे बढ़ते जाएंगे। -अखिलेश यादव, अध्यक्ष, समाजवादी पार्टी



नवरात्रि के नौ दिन: शवित से शवित की कानगना का पर्व

नवरात्रि पर्व का भारतीय समाज में विशेष महंग है, जो अधिकारी और बीड़ियों की पूजा का पावन करते हैं। ऐसा संयोग नौ वर्षों बाद पड़ा है। इससे पहले 2016 में नवरात्रि दस दिन के रहे थे। पंचांग के अनुसार 22 सितंबर को प्रतिपदा तिथि में प्रतिपदा तिथि से लेकर नवमी तक शारदीय नवरात्रि मनाए जाता है और लगातार नौ दिनों तक आदाशकृत जगमगाली का पूजन किया जाता है। इस वर्ष शारदीय नवरात्रि पर्व 22 सितंबर से 2 अक्टूबर तक मनाया जाएगा।

इस वर्ष नवरात्रि दस दिनों तक चलेंगे जबकि सामान्यतः नौ वर्ष भर में चार बार नवरात्रि मनाए जाते हैं, चौथे तथा शारदीय नवरात्रि के अलावा दो गुना नवरात्रि। इनमें चौथे तथा शारदीय नवरात्रि का विशेष महत्व माना गया है। प्रतिवर्ष आशिक वादपात्र के शुक्रवार के अनुसार 22 सितंबर को प्रतिपदा तिथि के साथ कलश स्थापना का विधान रहेगा। द्वितीया 23 सितंबर, तृतीया 24 सितंबर, चतुर्थी 25 सितंबर और चतुर्थी की बुधिक द्वितीया के कारण 26 सितंबर को भी रहेगी। पंचमी 27 सितंबर, षष्ठी 28 सितंबर, सप्तमी 29 सितंबर, अष्टमी 30 सितंबर, नवमी 1 अक्टूबर और विजयादशमी 2 अक्टूबर को मनाई जाएगी। कभी नौ तो दस दिनों तक चलने वाले नवरात्रि नवरात्रियों से युक्त माने गए हैं, जिसमें प्रत्यक्ष शक्ति का अपना अलग महत्व है। वास्तव में नवरात्रि पर्व 'शक्ति' का विभिन्न नौ स्वरूपों की उपासना के लिए ही निर्धारित हैं। मां दुर्गा के नौ रूपों में शैलपुत्री,

ब्रह्मचरिणी, चंद्रघंटा, कृष्णांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, मंकलरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री की पूजा की पावन करते हैं। नवरात्रि के पावन नौ वर्षों में मां दुर्गा परंतराज हिमाताकी की पुरी पावनी के रूप में विराजमान है। नौदी नामक व्रतभ पर स्वारा शैलपुत्री के दाहिने हाथ में विशूल और बाएं हाथ में कमल का पूष्य है। शैलराज हिमातय की कन्या हाने के कारण इन्हें शैलपुत्री कहा गया। इन्हें समस्त वन्य जीव-जुत्तों की रक्षा माना जाता है। दूसरे वर्षों पर विश्व वर्तनों में संसार से पहले शैलपुत्री के मंदिर की स्थापना इसीलिए की जाती है कि वह स्थान सुरक्षित रह सके। दुर्गा मां के दूसरे स्वरूप 'ब्रह्मचरिणी' को समस्त विद्याओं की ज्ञाना माना गया है। माना जाता है कि इनकी आधारधारा से अनंत फल की प्राप्ति और तप के लिए उनकी विश्व वर्तनों में विश्व वर्तनों की ज्ञाना आयी है। ऐसी की चारिणी वानी तप का आचरण करने वाली। ब्रह्मचरिणी श्वेत वस्त्र पहने दाएं हाथ में अष्टपदल की माला और बाएं हाथ में कमलदल लिए सुशोभित है। कहा जाता है कि देवी ब्रह्मचरिणी अपने पूर्व जन्म में पार्वती स्वरूप में थीं। वह भगवान शिव को पाने के लिए 1000 साल तक सिर्फ़ फल खाकर रहीं और 3000 साल तक शिव की तपस्या सिर्फ़ पूजों से गिरी पर्तिया खाकर की। इसी कटी तपस्या के कारण उन्हें चंद्रघंटा की जागी रही। देवी दुर्गा के नौ रूपों में विश्व वर्तनों के लिए उनकी विश्व वर्तनों की ज्ञाना आयी है। देवी दुर्गा के नौ रूपों की ज्ञाना आयी है।

ब्रह्मचरिणी, चंद्रघंटा, कृष्णांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, मंकलरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री की पूजा की पावन करते हैं। नवरात्रि के बाद कवच चौथे और दिवाली जैसे पवित्र त्योहार हमारे सामने हैं। फेस्टिवल सीजन में हर कोई चाहता है कि उसका लुक निखरा हुआ हो और चौहरे पर खास चमक झलक के लिए। विजी शैलपुत्र के कारण चेहरे पर ध्यान नहीं दे पाते हैं। इस वजह से उनकी स्मृति में हम समस्या उत्पन्न हो जाती है। ऐसे पांडालों में देवी दर्शन के इलावा गरबा, डॉडीया आदि में भागीदारी से सामाजिक मेल जोल निरन्तर बना रहता है। त्योहारों की शर्ऊपिंग और तैयारियों में हम लोग ज्यादा व्यस्त रहते हैं। पूजा पांडालों में देवी दर्शन के इलावा गरबा, डॉडीया आदि में भागीदारी से सामाजिक मेल जोल निरन्तर बना रहता है। त्योहारों की शर्ऊपिंग और तैयारियों में हम लोग ज्यादा व्यस्त रहते हैं। ऐसे पांडालों में देवी दर्शन के इलावा गरबा, डॉडीया आदि में भागीदारी से डल और बेजान हो जाती है। ऐसे में पुराने समय से इस्तेमाल होने वाले घरेलू पूर्खों आज भी कारगर साक्षित हो सकते हैं वाँ भी बिना किसी साइड इफेक्ट के।

फेस्टिवल में चेहरे पर बना रहेगा ग्लो



शहनाज हुसैन

योहारों का सीजन शुरू हो गया है। नवरात्रों के बाद कवच चौथे और दिवाली जैसे पवित्र त्योहार हमारे सामने हैं। फेस्टिवल सीजन में हर कोई चाहता है कि उसका लुक निखरा हुआ हो और चौहरे पर खास चमक झलक के कारण चेहरे पर ध्यान नहीं दे पाते हैं। इस वजह से उनकी स्मृति में कई समस्या उत्पन्न हो जाती है। ऐसे पांडालों में देवी दर्शन के इलावा गरबा, डॉडीया आदि में भागीदारी से सामाजिक मेल जोल निरन्तर बना रहता है। त्योहारों की शर्ऊपिंग और तैयारियों में हम लोग ज्यादा व्यस्त रहते हैं। पूजा पांडालों में देवी दर्शन के इलावा गरबा, डॉडीया आदि में भागीदारी से डल और बेजान हो जाती है। ऐसे में पुराने समय से इस्तेमाल होने वाले घरेलू पूर्खों आज भी कारगर साक्षित हो सकते हैं वाँ भी बिना किसी साइड इफेक्ट के।

चम्च मच शहद और, 1 चम्च मच गुलाब जल को मिक्स करके फेस पैके तैयार करें और फिर इसे चेहरे और गर्दन पर लगाएं। शहद और ओटमील का ए फेस पैक स्किन को सॉफ्ट और सुधार करता है। 1 चम्च मच शहद और 1 चम्च मच चावल का आटा मिलाएं। ऑटमील एक्स ग्लूटन फ्री होता है, ऑटमील प्रोटीन को अल्फा ग्लूटेन और ग्लूटेन फ्री बीजों के मौजूद एक्स्ट्रस्ट्रॉट्स और ग्लूटेन के हानिकारक फ्रैश ग्लूटेन के बिना। ऑटमील का एक्स्ट्रस्ट्रॉट्स और ग्लूटेन फ्री बीजों के बिना। इसे चेहरे पर लगाएं। इसे फेस पैक के कारण लगाएं। इसे फेस प

